Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

*A Referred Peer Review Research Journal*

# Vindhyan Bloom

***ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026***

| *Manuscript Information* | *Research Paper* | *Paper No. VBRP-17* |
|---|---|---|

## दर्शन और पर्यावरण

***डॉ रीता टेटवाल, शोधार्थी,*** *PMCOE Madhav Arts and Commerce College Ujjain M.P*

**सारांश**

भारतीय दर्शन में पर्यावरण का **स्वरूप** अधिक स्पष्ट व शुद्ध प्राप्त होता है वैदिक **प्रार्थनाओं** में प्रकृति संतुलन के तत्वों को परेशान किया गया है सूर्य से तब में से वर्षा भूमि को मात्र तो सम्मान वह आकाश को पितृत्व की गरिमा प्रदान करता है की जाती है **दर्शन**, पर्यावरण को भौतिक पदार्थ से नहीं अपितु मानवीय मनोवृतियों का प्रभाव मानता है अतः दर्शन स्वस्थ पर्यावरण के लिए मनुष्य की प्रत्यक्ष ज्ञानेंद्रिय वह कर्मेंद्रियों की छुट्टी की चर्चा करता है"मनुस्मृति का पोस्ट मानना है कि विकास के नाम पर लगाए गए बड़े उद्योग हमारे विनाश के कारण होंगे। मनु कृषि योग्य भूमि का भी संयमित प्रयोग का निर्देश देते हैं"बिना जुती हुई भूमि से प्राप्त जल और फल ही **मनुष्य** का शुद्ध आहार है। अम्ल वर्षा भूराक्षण पंजीकरण कार्बन डाइऑक्साइड की बढ़ती **मात्रा** अनेक समस्याओं से निपटने के लिए वृक्षारोपण आवश्यक है पुराने ने इन **समस्याओं** के लिए वर्षों को वह हमें जिताया था पुराण में एक वृक्ष को दसों पुत्रों के समान सम्मान देने की तार्किक चेतना जगाई।

मानव और प्रकृति का संबंध उतना ही प्राचीन है जितना स्वयं मानव **सभ्यता** का इतिहास।जलवायु परिवर्तन" की चिंता आज वैश्विक स्तर पर प्रतीत हो रही है, वह पर्यावरणीय दार्शनिक सोंच हमारे धर्मग्रंथों में अनादिकाल से ही कर ली गई थी।प्राचीन साहित्य (वेद, उपनिषद्, पुराण, महाभारत, गीता, रामायण) में पर्यावरणीय **तत्त्वों** के संरक्षण एवं महत्त्व का स्वर सदा से **मुखरित** रहा है। यथा-"दशपुत्रो समोद्रुमः" (मत्स्यपुराण), "माताभूमिपुत्रोऽहं पृथिव्याः, (अथर्ववेद), "माऽपोहिंसीः, मा औषधिः हिंसी (यजुर्वेद), "सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु (**अथर्ववेद**), "प्राणो वै वनस्पतिः (ऐतरेय ब्राह्मण), "अप्सु मे सोमो अवगीवीदन्तर्विश्वानिभेषजा (ऋग्वेद),आदि पर्यावरणीय तत्वों को देवतुल्य मानकर उनकी स्तुति करता रहा है।अतः हम कह सकते हैं कि विश्व के प्राचीनतम वैदिक ग्रंथ **ऋग्वेद** से लेकर वर्तमान समय तक के ऋषियों एवं कवियों ने पर्यावरण संरक्षण की **परिकल्पना** और विचार भिन्न-भिन्न पद्धतियों एवं रूपों में व्यक्त किए हैं।

हिन्दू धर्म का आधार वेद, उपनिषद्, भगवद्गीता, स्मृतिपुराण, रामायण, महाभारत आदि है।वैदिक काल में यज्ञ के **माध्यम** से मेघों को आमंत्रित करना एक मंत्रोक्त विधि मानी जाती थी। जिसके माध्यम से गुणों से युक्त वर्षा के जल निर्माण से कृषि उत्पादन **में** वृद्धि होती है। यज्ञ से किसी विशेष क्षेत्र का नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व का पर्यावर्णीय संतुलन बना रहता है।जैन धर्म के अनुसार भगवान महावीर की पर्यावरण के प्रति विशद् चेतना आचरांग **सूत्र** में देखने को मिलती है। भगवान महावीर ने अनुभव द्वारा यह बताया कि अनेक ऐसे जीव हैं जिनकी काया केवल धरती (पृथ्वी) है। अनेक जीव ऐसे हैं जिनकी काया केवल जल (पानी) है। ठीक इसी तरह भगवान महावीर ने हवा तथा वनस्पतिकायिक जीवों में भी चेतना का अनुभव किया।जैन दर्शन में **अध्यात्मवादी** प्रकृति की

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

पद्धति है। इस लोक में कई छोटे-छोटे जीव एवं अजीव द्रव्य उपस्थित हैं। **पर्यावरण** में छोटे-छोटे जीव जैसे-बैक्टीरिया, **प्रोटोजोआ** भी आते हैं जो कि सजीव पर्यावरण का हिस्साबौद्ध दर्शन करुणा और प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत पर आधारित है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार संसार की सभी वस्तुएँ परस्पर **निर्भर** हैं।इस सिद्धांत से स्पष्ट होता है कि **मनुष्य** प्रकृति से अलग नहीं है बल्कि उसका **अभिन्न** अंग है। इसलिए प्रकृति के संरक्षण में ही मानव कल्याण निहित है।

बौद्ध दर्शन में पर्यावरण **जागरूकता** से सम्बन्धित कार्य बहुतायत में देखने को मिलते हैं। विनयपिटक ग्रंथ में कुशल **व्यक्तियों** को पेड़-पौधों के रोपण का कार्य करने के लिये निर्देशित किया गया है। मनुष्य का जीवन प्रकृति से अलग नहीं है अर्थात् प्रकृति का अभिन्न अंग हैंसांख्य दर्शन में मानव के दुःखों को तीन प्रकार का कहा गया है— आधिदैविक, आधिभौतिक, आध्यात्मिक । इसी **प्रकार** मानव भी तीन प्रकार के पर्यावरण से घिरा होता है- आधिदैविक, आधिभौतिक, **आध्यात्मिक** । आधिदैविक पर्यावरण से तात्पर्य दैविक (देवान् अग्निवाय्वादीन् अधिकृत्य **निर्वृत्तम्** अर्थात् प्राकृतिक शक्तियों के **क्रियाकलापों** द्वारा निर्मित पर्यावरण, आधिभौतिक **पर्यावरण** से तात्पर्य - प्राणियों विशेषतः मनुष्य के भौतिक क्रियाकलापों द्वारा निर्मित पर्यावरण आध्यात्मिक पर्यावरण से तात्पर्य 'मन से उत्पन्न', अर्थात् मनुष्य के मन-बुद्धि के **क्रियाकलापों** से निर्मित पर्यावरण होता है। **त्रिविध** दुःखों की उत्पत्ति इन्हीं त्रिविध पर्यावरण से होती है। साथ ही जिस प्रकार दुःख त्रिविध है **उसीप्रकार** सुख भी त्रिविध ही होंगे और उनकी उत्पत्ति भी उपर्युक्त त्रिविध पर्यावरण से ही होगी।आध्यात्मिक पर्यावरण के **अध्ययन** के अन्तर्गत भौतिक शक्तियों के **द्वारा** मनुष्य के मन पर पड़नेवाले प्रभाव अथवा **दुष्प्रभाव** एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, **पारिवारिक**, आर्थिक, राजनैतिक आदि कारणों से मन पर पड़नेवाले प्रभाव एवं दुष्प्रभाव से मानव सहित अन्य प्राणियों के क्रियाकलापों में होनेवाले परिवर्तन पर भी सर्वेक्षणात्मक अध्ययन निष्कर्ष दिया जाता है।" इस प्रकार **आध्यात्मिक** पर्यावरण का कार्यक्षेत्र अत्यन्त विशाल है। शरीर स्तर से ऊपर के सभी कष्ट जो असाधारण रूप से मन आदि को प्रभावित करते हैं, उनकी इसमें गणना की जाती है।

**निष्कर्ष**-दर्शन और पर्यावरण का संबंध अत्यंत गहरा और व्यापक है। **पर्यावरणीय** संकट केवल वैज्ञानिक या तकनीकी समस्या नहीं बल्कि मानवीय मूल्यों और जीवन-दृष्टि का संकट भी है। भारतीय दर्शन में प्रकृति को पवित्र तथा जीवंत सत्ता माना गया है, जबकि आधुनिक पर्यावरण नैतिकता सभी जीवों और पारिस्थितिक तंत्र के **अंतर्निहित** मूल्य को स्वीकार करती है।आज **आवश्यकता** इस बात की है कि हम विकास और **पर्यावरण** के बीच संतुलन स्थापित करें तथा **दर्शन** द्वारा प्रदत्त नैतिक मूल्यों—अहिंसा, **अपरिग्रह**, करुणा, सहअस्तित्व और **उत्तरदायित्व**—को अपने जीवन में अपनाएँ। तभी मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित हो सकेगा और पृथ्वी पर जीवन की निरंतरता **सुनिश्चित** हो सकेगी।

## संदर्भ ग्रंथसूची


- वैदिक वाङ्मय में विज्ञान, डा० रामेश्वर दयाल गुप्त, महर्षि **सान्दीपनि** राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान **उज्जैन**
- वैदिक चिन्तन और आधुनिक पर्यावरण-विज्ञान,**आचार्य** (डॉ०) बृहस्पति मिश्र
- धर्म दर्शन की रूपरेखा, डॉ हीरेंद्र प्रसाद सिंह मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2012, पृष्ठ-1, 2
- आचरांग सूत्र 2:2:3
- आचरांग सूत्र 1:5:5
- स्थानांग सूत्र 1:1
- ऋग्वेद
- यजुर्वेद
- अथर्ववेद